पुरुषोत्तम संगमयुग और परमात्म-शक्ति की अनुभूति - III

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

इस सृष्टि में दो प्रकार के लोग हैं, भौतिकवादी और अध्यात्मवादी। भौतिकवादी मानते हैं कि सभी वस्तुओं का निर्माण तत्वों से ही होता है जबकि अध्यात्मवादी मानते हैं कि सृष्टि के निर्माण का कार्य परमात्मा द्वारा हुआ है। दुनिया के सभी धर्म अध्यात्मवादी हैं क्योंकि सभी धर्म रचयिता और रचना के अस्तित्व के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। सब परमात्मा को मानते हैं परंतु परमात्मा क्या है, कौन है, कैसा है, यह नहीं जानते। मिसाल के तौर पर एक भाई ने ज्ञान-चर्चा के दौरान कहा, शिव ही अल्लाह है, ऐसा कहकर आप अल्लाह की ग्लानि कर रहे हो। तब दूसरे ने कहा, आप सोचिए, अल्लाह वही शिव है, ऐसा समझने से अल्लाह का पलड़ा भारी हो जाता है। तब प्रथम भाई ने कहा – यह ठीक है, अल्लाह ही शिव है। तब दोनों धर्मों में भेद कहाँ रहा? आज यही समस्या है कि परमात्मा के बारे में बहुत अधिक मत-मतान्तर हैं। एक-दूसरे के धर्म में, परमात्मा के बारे में जो मान्यताएँ हैं, उनको भी मानने के लिए लोग तैयार नहीं हैं।

इसलिए शिव पिता परमात्मा ने हमें अपने निराकार रूप का जो परिचय दिया है। इस परिचय को जानकर विभिन्न धर्म, मत को मानने वाले भी एक पिता परमात्मा को अपना सच्चा पिता मानकर एक दैवी परिवार के रूप में दुनिया के विभिन्न कोनों में जीवन को श्रेष्ठ बनाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। प्रत्येक धर्म की परमात्मा के बारे में मान्यता अलग-अलग होते हुए भी सब धर्म मानते हैं कि परमात्मा निराकार हैं। मैं एक बार एक आत्मा से बात कर रहा था। उसने कहा, मैं श्री कृष्ण को परमात्मा मानता हूँ। तब मैंने उनसे पूछा, आपके कथनानुसार परमात्मा ने श्री कृष्ण के रूप में अवतार लिया परन्तु अवतार लेने से पहले परमात्मा का आदि स्वरूप क्या था और कृष्ण के रूप से अव्यक्त होने के बाद उनका स्थायी स्वरूप क्या है? तब वह आत्मा सोच में पड़ गया। तब मैंने उनकी उलझन दूर करने के लिए निराकार परमात्मा का सत्य परिचय दिया। उनको समझाया कि एक व्यक्ति पिता, पति, सेठ, नौकर, ड्राइवर आदि विभिन्न रूपों में पार्ट बजाते हुए भी उसका एक शाश्वत स्वरूप है। उसी प्रकार परमात्मा के एक शाश्वत स्वरूप को पहचानना ज़रूरी है। स्थायी स्वरूप को हम पहचान लें तो परमात्मा को याद करना भी सहज हो जाता है।

इस वर्ष को हमने 'परमात्म शक्ति की अनुभूति' वर्ष के रूप में मनाने का तय किया है, यह बहुत अद्‌भुत विषय है क्योंकि जब हम निराकार परमात्मा का परिचय देते हैं तब हम धर्मों के द्वारा निर्माण किए गए परमात्मा के परिचय के भेदों से ऊपर हो जाते हैं अर्थात् साकार रूप के अनेक संबंध, कर्त्तव्य, गुण आदि से हम ऊपर चले जाते हैं। मिसाल के तौर पर, कोई राम को परमात्मा मानता है तो प्रभु राम वनवास गए, वहाँ रावण के साथ युद्ध किया आदि-आदि प्रसंगों में ही उसकी बुद्धि और विचारधारा रुक जाती है। भूतकाल के उस कर्त्तव्य को याद करने से इतनी शक्ति की अनुभूति नहीं होती जितनी वर्तमान के कर्त्तव्य और संबंध को याद करने से होती है। वर्तमान में परमात्मा का जो कर्त्तव्य चल रहा है उसका परिचय वर्तमान की परिस्थितियों के आधार पर मिलता है। प्रत्येक कर्त्तव्य में समय के साथ-साथ परिवर्तन होता है। लौकिक दुनिया में जैसे कोई पहले कन्या है, बाद में पत्नी बनती है, फिर सास बनती है, फिर दादी माँ बनती है। तो समय के साथ-साथ जो परिवर्तन हुआ है उसको ध्यान में रखना पड़ता है क्योंकि दादी माँ के रूप में उनके कर्त्तव्य अवश्य ही, कन्या रूप के कर्त्तव्यों से अलग होंगे। अगर दादी माँ को कोई उसका कन्या रूप याद कराएगा तो लोग हँसी करेंगे और कहेंगे कि वर्तमान कर्त्तव्य को याद करो तो ही दादी माँ खुश होंगी। इस तरह से वर्तमान की वास्तविकता के आधार पर परमात्मा का परिचय जानना बहुत ज़रूरी है

क्योंकि उसी के साथ हमारा जीवन व्यवहार भी जुटा हुआ है।

भूतकाल के कर्त्तव्यों के आधार पर परमात्मा को याद करने के बदले, वर्तमान के कर्त्तव्यों के आधार पर उनको याद करने से हमें आने वाले भविष्य की तैयारियाँ करने में मदद मिलती है। जो परमात्मा का शाश्वत स्वरूप है उसी के साथ सब संबंध, गुण, शक्ति और कर्त्तव्य जुटे हुए हैं। उसको याद करने से विशेष बल और सफलता मिलती है। परमात्मा अभी बाप, टीचर, गुरु के रूप से अपनी शक्तियों और गुणों का परिचय दे रहे हैं जिनसे जीवन में अनेक अनुभूतियाँ होती हैं। ब्रह्मा बाबा के समय में थोड़े दिन, बाबा ने पांडव भवन में सुबह पदयात्रा सबको कराई और एक दिन पदयात्रा करते-करते पांडव भवन के सामने ऊँचे स्थान पर खड़े होकर सभी ब्रह्मावत्सों को बच्चे-बच्चे कहकर बाबा पुकारने लगे। अठारह जनवरी की अव्यक्त मुरली में अव्यक्त बाबा ने कहा कि ऐसे नहीं कि आप बच्चे ही मुझे याद करते हो परंतु मैं भी आप बच्चों से मिलने की आश रखता हूँ। बच्चों के दिल में बाप की याद है तो बाप के दिल में बच्चों की भी याद है। ऐसा सुंदर महावाक्य हम आज भी याद करते हैं तो परमात्मा के गुणों और शक्तियों का अद्‌भुत खज़ाना हमें प्राप्त होता है। परमात्मा को हम प्रेम का सागर, गुणों का सागर, शांति का सागर, सुख का सागर, पवित्रता का सागर, आनन्द का सागर, शक्ति का सागर आदि उनके गुणों और शक्तियों के आधार पर याद करते हैं तब उन गुणों और शक्तियों की अनुभूति हमारे जीवन में होती है। मिसाल के तौर पर, मैं परमात्मा को ज्ञान के सागर के रूप से जब मैं याद करता हूँ तब मुझे लेख लिखने की शक्ति, प्रेरणा तथा बल स्वत: मिल जाते हैं। कई मुझसे प्रश्न पूछते हैं कि रमेश भाई, लेख लिखने का समय आपको कब मिलता है। तब मैं कहता हूँ कि लेख सहज लिख सकता हूँ। प्रवचन के समय भी स्टेज पर बैठकर परमात्मा को ज्ञान सागर के रूप में याद करता हूँ तो वह शक्ति सहज मिलती है और प्रवचन सबको पसंद आता है।

वर्तमान समय एक विद्वान योगाचार्य ने योग (हठयोग) के बारे में काफी मेहनत की है और विभिन्न प्रकार की सी.डी. बनाई हैं। योग और चर्मरोग, योग और हृदय के रोग, योग और किडनी के रोग - ऐसे 30-40 प्रकार की अलग-अलग सी.डी. बना करके, हठयोग की जानकारी दी है। अगर हठयोग के प्रचार के लिए इतनी मेहनत करके ऐसी सी.डी. का निर्माण हुआ है और सामान्य जनता हठयोग के प्रयोग करके अनुभव करने के लिए कटिबद्ध हुई है तो क्यों नहीं हम राजयोगी परमात्मा के विभिन्न गुण, शक्ति, संबंध, कर्त्तव्य आदि की अनुभूति के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की सी.डी. बनाएं। कॉमेन्ट्री रिकॉर्ड कर सी.डी. बनाएं। परमात्मा आनन्द का सागर है तो सतत् हमें आनन्द का अनुभव कैसे हो, एक सी.डी. ऐसी भी बनाएं, मेहनत करें। आनन्द के कारण हमारा जीवन भी प्रफुल्लित हो और औरों को भी प्रफुल्लित करें। शिवबाबा की साकार और अव्यक्त मुरलियों से हमें परमात्मा के गुण, शक्ति और कर्त्तव्य के बारे में ज्ञान-रत्नों का अखुट खजाना मिला है और उसी खजाने के मोतियों को चुनकर अलग-अलग कर दुनिया के सामने प्रत्यक्ष करने की ज़रूरत है। सी.डी. तथा किताब आदि के रूप में साधन बनाकर हम राजयोग की सहज और सरल रूप से सबको शिक्षा दे सकेंगे और परमात्मा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। हमारे मीठे दैवी भ्राता डॉ. गिरीश पटेल ने उसके लिए मेहनत की है, और भी अनेकों ने थोड़ी-बहुत मेहनत की है परंतु अभी इसके बारे में हम सब विशेष मेहनत करें और ऐसे साधन निर्माण करें ताकि ऐसे साधनों के द्वारा प्रभु-मिलन और प्राप्ति का अनुभव सहज हो जाए।

अभी स्पार्क की मीटिंग में सभी विद्वानों को मैंने यही बताया कि रावण तमोगुण की प्रधानता का प्रतीक है और परमात्मा राम (शिवपिता परमात्मा) शुभचिंतन, प्रेम, शक्ति, आनन्द का प्रतीक है। आज परमात्मा पिता को इन्हीं गुणों के आधार पर हम सब याद करें तो समाज से दु:ख-अशान्ति आदि सदाकाल के लिए दूर हो सकती हैं। इस विषय पर हम अगले लेख में विचार करेंगे।

❖